संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -295 मंगलवार ,27 अगस्त 2024 , पृष्ठ - 8+8 मूल्य 4 रूपये

कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद

छत्तीसगढ़ सरकार 36 घंटे भी नहीं दिए

और उजाड़ दिया आशियाना

अब तो बताईए मुख्यमंत्री जी...क्या छापे ?

पर इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक...

कलम बंद का 56 वां दिन

क्या प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री के लिए पूरे प्रदेश के लोगों से ऊपर उनके भतीजे हैं ?

» छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार क्या गैर संवेदनशील सरकार है...?

» सरकार को कमियां ना दिखाएं तो क्या दिखाएं...?

» क्या विष्णुदेव साय सरकार बेहतर चल रही है...सिर्फ यह बात आईएएस लॉबी को पता है...आम जनता को नहीं है जानकारी...?

» किसी का दिव्यांग प्रमाण-पत्र फर्जी वह करता है मंत्री के घर मनमर्जी, दिव्यांग मांग रहे अधिकार क्या उन्हे दोगे न्याय प्रदेश के कर्णधार?

» क्या फर्जी दिव्यांग और फर्जी डिग्री के आधार पर जो कर रहे नौकरी उन्हे होगी जेल...उन्हें मिल सकेगा संकल्प पत्र अनुसार दण्ड...?

स्वास्थ्य मंत्री ने पत्रकारों को संरक्षण देने की बात कही...वहीं दूसरी तरफ भ्रष्टाचार पर जनसंपर्क अधिकारी को आगे कर समाचार-पत्र पर दबाव बनाने का कर रहे वह काम...ये कैसा संरक्षण?

कैसे पत्रकारों को मिलेगी सुरक्षा...कैसे समाचार-पत्र रह सकेंगे निष्पक्ष...

जब उन्हे सच लिखने पर मिलेगी सजा?

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान...

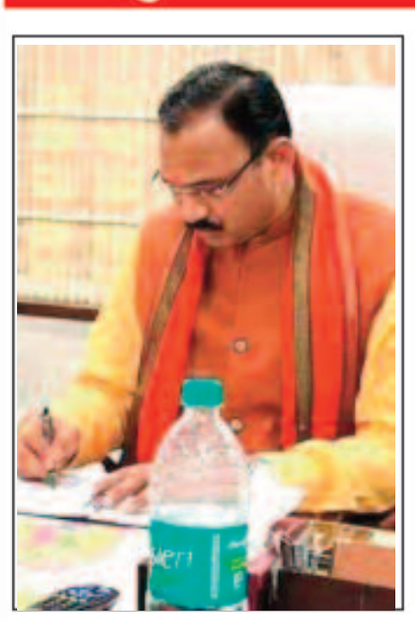

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री

श्री श्यामबिहारी जायसवाल

के विभाग से संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस

श्री मयंक श्रीवास्तव

के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...प्रशासनिक अत्याचार झेलने के बावजूद है जारी ...

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री रेमन डेका से हस्तक्षेप की मांग...

क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव साहब?

स्पष्ट कीजिए माननीय प्रधानमंत्री जी,स्पष्ट कीजिए माननीय मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ शासन,स्पष्ट कीजिए माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी छत्तीसगढ़ शासन...गृहमंत्री जी,भारत सरकार क्या छत्तीसगढ़ में भ्रष्टाचार को लेकर खबर प्रकाशन पर होगी समाचार पत्र पर कार्यवाही ?

पूर्व सरकार के मीडिया सलाहकार रहे रुचिर गर्ग ने

पत्रकारों के साथ हुई घटना पर सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की

रुचिर गर्ग ने बस्तर के पत्रकारों पर तो कहा पर सरगुजा अंचल सहित प्रदेश के पत्रकारों के मामले पर चुप क्यों रहे?

-विशेष संवाददाता-

अम्बिकापुर/रायपुर,26 अगस्त 2024(घटती-घटना)।

रुचिर गर्ग किसी पहचान के मोहताज नहीं है पूर्व सरकार में मीडिया सलाहकार तो रहे ही साथ ही बड़े व प्रतिष्ठित अखबार के संपादक भी रह चुके है पत्रकारिता में उनकी पैनी नजर भी रहती है क्योंकि वह उससे जुड़े हुए व्यक्ति हैं इसीलिए वह पत्रकारों पर जब भी कोई आपत्ति विपत्ति आती है तो उस पर वह मुखर होकर लिख बोल जाते हैं। भले से ही उन पर किसी राजनेता व पार्टी से जुड़े होने का मसला है पर पत्रकारों के मामले में सिर्फ वह पत्रकार होते हैं, छत्तीसगढ़ सरकार में मौजूद पत्रकारों पर उन्होंने अपना विचार सोशल मीडिया पर साझा किया जिस विचार पर जब नजर गई तो यह देखा गया कि उन्होंने पत्रकारों से जुड़े कई गहरी बात अपने लेखनी में सोशल मीडिया पर लिखे थे, जो कहीं ना कहीं पत्रकारों के हौसला बढ़ाने वाले थे तो वही पत्रकारों के साथ बर्बरता करने वालों के लिए चुभने वाली थी। उन्होंने 12 अगस्त 2024 को यह पोस्ट सोशल मीडिया पर लिखा था और यह तब लिखा था जब बस्तर में चार पत्रकारों को फर्जी मामले में फसाया गया था उन्होंने क्या लिखा अब आप यहां से पढ़िए...बस्तर के चार पत्रकार क्रमशः बप्पी राय, धर्मेन्द्र सिंह, मनीष सिंह और निशु त्रिवेदी को आंध्र प्रदेश की पुलिस ने गाड़ी में गांजा रखने के आरोप में गिरफ्तार किया है। दो अन्य पर भी इस मामले में एफआईआर है लेकिन वो फरार बताए जा रहे हैं। बस्तर के पत्रकार उद्वेलित हैं। पत्रकार बता रहे हैं और तमाम तथ्य,परिस्थितियां इस बात की गवाह हैं कि एक स्थानीय पुलिस अफसर अजय सोनकर की इस मामले में भूमिका संदिग्ध है और यह आरोप है कि इस अफसर ने इन पत्रकारों को फंसाने के लिए इनकी गाड़ी में गांजा रखवाया। इस आरोप की जांच होनी ही चाहिए क्योंकि यदि ये सिलसिला शुरू हुआ तो थमेगा नहीं। यह दरअसल पुराना पुलिसिया हथकंडा है। सरकारें जानती हैं, अदालतें भी जानती हैं। छत्तीसगढ़ शासन ने इस पुलिस अफसर को फिलहाल लाइन अटैच कर दिया है। मुझे जानकारी है कि छत्तीसगढ़ पुलिस के आला अधिकारी इस मामले में आंध्र प्रदेश में उच्च स्तर पर संपर्क बनाए हुए हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी पूरे मामले से अवगत हैं। दिल्ली और हैदराबाद से भी कुछ उच्च पदस्थ लोग और पत्रकार अपने स्तर पर कोशिशें कर रहे हैं पर जब तक इन कोशिशों का कोई परिणाम आता, इन पत्रकारों पर एफआईआर हो चुकी थी। खबरों के मुताबिक राहत बस इतनी है कि चालीस किलो गांजे की नहीं 15 किलो गैर व्यापारिक गांजे की एफआईआर है।

सवाल अलग हैं...सवाल बस्तर में पत्रकारिता का है

रुचिर गर्ग आगे लिखते है की दरअसल बस्तर में पत्रकार सिर्फ खतरों के बीच पत्रकारिता ही नहीं करते बल्कि पत्रकारिता से इतर ऐसी मानवीय जिम्मेदारियों का निर्वाहन भी करते रहते हैं जो उनसे अपेक्षित नहीं है। जैसे कभी सुरक्षा बलों के जवानों को नक्सलियों के कब्जे से छुड़वाना,कभी नक्सली और सुरक्षा बल या सरकार के बीच संवाद का जरिया बनना, ऐसा भी हुआ है कि नक्सल इलाके से जवान का शव लेने ग्रामीणों के साथ पत्रकार ही गए,क्योंकि वहां भरोसा सिर्फ पत्रकार पर है। न्यूज चैनल सहारा समय मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ के दिनों की याद आती है जब वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र बाजपाई जी एक पुलिस अफसर को माओवादियों के चंगुल से छुड़ा कर लाए थे। सहारा समय के दिल्ली स्थित न्यूजरूम, रायपुर ब्यूरो और जगदलपुर से राजेंद्र बाजपेयी ने बाकायदा पत्रकारिक मापदंडों पर ही यह अभियान छेड़ा था। दिग्गज टीवी पत्रकार और तब सहारा समय के नेशनल हेड प्रभात डबराल जी सुबह से इसे मॉनिटर कर रहे थे। यहां तक कि वो स्टूडियो में बैठाए जाने वाले मेहमानों तक के नाम डिस्कस कर रहे थे। अंततः वो पुलिस अफसर नक्सल चंगुल से छूटे।

एक अफसर ने मौजूद सहारा समय के लोगों को सैल्यूट तक कर दिया था... यह कहते हुए कि मैं सिर्फ सहारा समय की वजह से यहां हूं...

रुचिर गर्ग आगे लिखते है की एक बार तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह के एक कार्यक्रम में दिग्गज अफसरों, सुरक्षा कर्मियों और नेताओं की भीड़ में इस अफसर ने वहां मौजूद सहारा समय के लोगों को सैल्यूट तक कर दिया था...यह कहते हुए कि मैं सिर्फ सहारा समय की वजह से यहां हूं। हम सभी असहज थे पर ये सच था। सहारा समय के दिनों की ही एक और घटना। इसमें बप्पी राय और उनके साथ पत्रकार साथी मकबूल की भूमिका थी। माओवादियों ने पांच पुलिस कर्मियों का अपहरण कर लिया था। इस काम को भी पूरे व्यवस्थित तरीके से सहारा समय ने बाकायदा एक ऑपरेशन की तरह किया था। तब के मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह और डीजीपी विश्व रंजन जी भी अपने अफसरों से लगातार अपडेट ले रहे थे। हालात संवेदनशील थे।

पुलिस की गुटबाजी के कारण मामला बिगड़ते-बिगड़ते बचा था और जिसकी जान खतरे में पड़ गई थी वो बप्पी राय ही था...

रुचिर गर्ग आगे लिखते है की संवेदनशील

इसलिए क्योंकि तब पुलिस की गुटबाजी के कारण मामला बिगड़ते-बिगड़ते बचा था और जिसकी जान खतरे में पड़ गई थी वो बप्पी राय ही था! बप्पी मेरे लिए छोटे भाई की तरह है इसलिए 'था' लिख रहा हूं अन्यथा बप्पी का पत्रकारिक अनुभव पच्चीस साल से कम नहीं है। जब यह पता चला कि बप्पी की जिंदगी खतरे में है और साथ ही उन पांच जवानों की भी,तो मैंने चिंता के साथ मुख्यमंत्री डॉक्टर रमन सिंह को इस बात से अवगत कराया और उन्होंने बिना एक पल गंवाए अफसरों को निर्देश दिए थे। यह दो चार दिनों का अभियान था। पहली चुनौती उस नक्सली शिविर तक पहुंचने की थी जहां सिपाही बंधक थे। पूरी कहानी लंबी है और उसके लिए बप्पी को भी सामने बैठना होगा। लेकिन जब पांचों जवान नक्सलियों के कब्जे से छूटे तो बप्पी राय हमारा हीरो था और हमने चैन की सांस ली। आज बप्पी के साथ खड़े बस्तर के पत्रकारों में एक राजा राठौर हैं। राजा ने कनाडा से भ्रमण पर निकले एक साइक्लिस्ट को नक्सल कब्जे से छुड़वाया था राजा नवभारत के संवाददाता हैं। तब नवभारत में फ्रंट पेज पर यह लीड खबर थी। ऐसे ना जाने कितने अवसर होंगे जब बस्तर के पत्रकारों ने जान हथेली पर रख कर पत्रकारिता की है।

कई पत्रकारों के हिम्मत भरी रिपोर्टिंग की कहानी

रुचिर गर्ग आगे लिखते है की गणेश मिश्रा निजी काम से कहीं जा रहे थे और नक्सल-पुलिस क्रॉस फायरिंग में फंस गए। सब छोड़ कर घटना स्थल से रिपोर्ट कर रहे थे, तस्वीरें ले रहे थे। उनके पास वहां से बच निकलने का अवसर था। लेकिन उनके लिए बड़ा अवसर उस घटना की आंखों देखी रिपोर्टिंग था। हमने नई दुनिया में प्रथम पृष्ठ पर अपने ही संवाददाता गणेश मिश्र का इंटरव्यू छापा था। जगदलपुर के साथी पत्रकार रजत बाजपेयी ने भी इसी तरह नक्सल-पुलिस गोलियों के बीच रिपोर्टिंग की थी। चर्चित झीरम हमले में जगदलपुर के टीवी पत्रकार आईबीसी 24 के नरेश मिश्रा की रिपोर्टिंग जो दुनिया भर में छाई थी, कोई कैसे भूल सकता है। पुलिस और नक्सलियों के बीच क्रॉस फायरिंग में बस्तर के पत्रकारों के फंसने की कई घटनाएं है। ये न तो कॉन्फ्लिक्ट जोन में रिपोर्टिंग का प्रशिक्षण प्राप्त पत्रकार हैं ना बुलेट प्रूफ जैकेट पहनकर एंबेडेड जर्नलिस्ट सा काम कर रहे होते हैं। ये सब जुनूनी हैं। ये कुछ बिखरी-बिखरी यादें हैं। ऐसे किस्सों का ढेर है। हर रोज ऐसे किस्से हैं। इनमें सुरक्षा बलों की प्रताड़ना के ढेर सारे मामलों से लेकर नक्सली गोलियों का निशाना बने पत्रकारों की कहानियां भी हैं। छत्तीसगढ़/बस्तर की पत्रकारिता के इन नायकों को कम सराहना मिल पाती है। हकीकत यह है कि अक्सर बड़े बस्तर के पत्रकार रायपुर से दिल्ली और न्यूयॉर्क तक के बड़े पत्रकारों के सोर्स बन कर रह जाते हैं !

पत्रकार कॉन्फ्लिक्ट जोन में रिपोर्टिंग कर रहे हैं...

रुचिर गर्ग आगे लिखते है इंडियन एक्सपेस के राज्य संवाददाता आशुतोष भरद्वाज ने बस्तर की रिपोर्टिंग करते हुए चप्पा-चप्पा छाना था और वो बस्तर के पत्रकारों की चिंताओं से और वहां पत्रकारिता की चुनौतियों से खूब परिचित हैं। ऐसा नहीं है कि इन पत्रकारों में काली भेड़ें नहीं है या इनमें से किसी से कभी कोई चूक हुई ही न हो लेकिन जिसे महसूस करने की जरूरत है वो ये बात है कि ये पत्रकार कॉन्फ्लिक्ट जोन में रिपोर्टिंग कर रहे हैं, न्यूनतम सुविधाओं और न्यूनतम पारिश्रमिक/अल्प वेतन के साथ...अगर कॉन्फ्लिक्ट जोन में रह कर पत्रकारिता कर रहे पत्रकारों के साथ खड़े नहीं हुआ गया तो कल तकलीफ होगी। ये सवाल केवल बस्तर की पत्रकारिता का ही नहीं है। ये पत्रकार अपनी सीधी जिम्मेदारियों से इतर कुछ करते हैं तो सिर्फ इसलिए कि ये शांति कर्मी हैं,सिर्फ इसलिए कि ये संसदीय लोकतंत्र के भी हिमायती हैं। और ऐसा नहीं है कि बस्तर के पत्रकारों ने सत्ता विरोधी पत्रकारिता करने से किनारा किया हो या बस्तर में बस नक्सल पुलिस पत्रकारिता ही हो रही है! स्मृति शेष किरीट दोषी जी से लेकर आजतक बेहतरीन पत्रकारिता के ढेरों उदाहरण हैं। आज अगर बप्पी राय और बाकी के तीन पत्रकार साथियों को फर्जी मामले में सजा होती है तो उनके हौसले टूटेंगे। अच्छा है कि बस्तर के सारे पत्रकार अपने साथियों के साथ खड़े हैं। सुरेश महापात्र से लेकर तमाम पत्रकार लिख रहे हैं,बोल रहे हैं। मेरे लिए व्यक्तिगत तौर पर यह भावुक करने वाली खबर है कि बप्पी ने पुलिस कस्टडी से मेरे लिए यह संदेश भेजा है कि भैया से कहना मैं गलत नहीं हूं । बस्तर की सल्फी, नदी,पहाड़,झरनों और संगीत पर फिर कभी लिखा जा सकता है। आज तो कॉन्फ्लिक्ट जोन में एक पुलिस अफसर की साजिश का शिकार पत्रकारों के साथ खड़े होने का समय है। दिल्ली तक तो यह खतरा देर से या थोड़ा कम ताप के साथ पहुंचेगा पर जहां तक भी पहुंचता हो इसका विरोध करना चाहिए।

रुचिर गर्ग ने बस्तर के पत्रकारों पर तो कहा पर सरगुजा अंचल सहित प्रदेश के पत्रकारों के मामले पर चुप क्यों रहे?

रुचिर गर्ग ने बस्तर के मामले मे वहां के पत्रकारों के मामले मे तो खुलकर अपने विचार सोशल मीडिया पर रखे,बस्तर के पत्रकारों को लेकर उनके साथ जो षड्यंत्र हालिया घटित हुआ उसको लेकर उन्होंने काफी कुछ बात सार्वजनिक रूप से जाहिर की लेकिन सरगुजा अंचल में भी पत्रकारों अखबारों के साथ गलत हुआ जो सत्य की लड़ाई लड़ने के कारण हुआ उसको लेकर उन्होंने कभी कुछ नहीं कहा। आखिर उन्होंने क्यों सरगुजा के पत्रकारों सहित समाचार पत्रों से खुद को अलग किया यह बड़ा सवाल है। क्या सरगुजा के पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ उनकी नजर में नहीं या फिर सरगुजा के मामले से अनभिज्ञ है सरगुजा के पत्रकारों को भी रुचिर गर्ग जी के साथ की जरूरत है ताकि उन्हें भी कमियों को दिखाने का हौसला मिल सके जैसे उन्होंने बस्तर के पत्रकारों को हौसला दिलाया।

पूर्व और वर्तमान मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार पत्रकारों के मामले में खुलकर विचार क्यों नहीं रख रहे?

पूर्व मुख्यमंत्री या वर्तमान मुख्यमंत्री यदि दोनो के मीडिया सलाहकारों की बात की जाए तो दोनो ही पत्रकारों के मामले में खुलकर बात सामने नहीं रख पा रहे हैं। वैसे पत्रकारों के लिए सबसे बड़ी विडंबना यह है की मुख्यमंत्री के यहां मीडिया सलाहकार बने पत्रकार मंत्रियों विधायकों के यहां मिडिया सलाहकार बने पत्रकार भी अपने उन पत्रकार साथियों के लिए कुछ नहीं कर पा रहे या उनके लिए कुछ नहीं कह पा रहे जो सत्य प्रकाशित करने के कारण सरकार के हाशिए पर हैं सरकार से प्रताड़ित हैं। ऐसे पत्रकार अपनी सुविधा बढ़ाने में लगे हैं संसाधन जुटाने में लगे हैं जिससे सरकार जाने के बाद वह चैन से जीवन बिता सकें। लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बनकर सरकार को आइना दिखाना उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए छोड़ दिया और तभी से पत्रकार साथियों को भी उन्होंने भुला दिया।

क्या मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार पत्रकारों के मामले में सही सलाह नहीं दे पा रहे?

मुख्यमंत्री के पास मीडिया सलाहकारों के नाम पर कई लोग काम करते हैं और ज्यादातर लोग पत्रकारिता से जुड़े लोग होते हैं। पूर्व या वर्तमान मुख्यमंत्री की बात की जाए तो सवाल उठता है क्या ऐसे लोग उन्हें उचित सलाह नहीं दे पा रहे हैं?

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान...

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग से संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...?

कलम बंद...का 56 वां दिन

?

कलम बंद...का 56 वां दिन

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

C M Y K

सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान क्या नहीं मानते संविधान को...

क्या सिर्फ मानते है तो नेताओं की बात...

सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान आखिर आप क्यों कानून के नियमो को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने को मजबूर हो गये?

दैनिक घटती-घटना कार्यालय साथ ही संपादक के प्रतिष्ठान को कलेक्टर सरगुजा ने अल सुबह जमीदोज कर दिया जो 28 जुलाई की सुबह थी,संपादक को कानून के अनुसार न समय दिया गया पर्याप्त न ही इस कार्यवाही के दौरान यह भी ध्यान रखा गया की बरसात के दिन में बेदखली की कार्यवाही नहीं की जाती है वहीं यह भी ध्यान नहीं रखा गया की जिसके विरुद्ध कार्यवाही हो रही है उसके पिता का देहांत हुआ है और अभी हिन्दू रीति रिवाज अनुसार उसके यहां दशकर्म का भी कार्यक्रम नहीं संपन्न हुआ है ऐसे में वह कैसे बेदखली के खिलाफ कहीं दौड़भाग कर सकेगा,कुल मिलाकर यदि देखा जाए तो कलेक्टर सरगुजा की पूरी कार्यवाही ऐसी नज़र आई जिसमे नियमों को इसलिए तोड़ा-मरोड़ा गया जिससे दैनिक घटती-घटना समाचार पत्र कार्यालय साथ ही संपादक का प्रतिष्ठान जमींदोज किया जा सके। अब इस मामले में कलेक्टर सरगुजा से एक ही सवाल है की आखिर वह क्यों इतने मजबूर हो गए? किसके कहने पर वह एक समाचार पत्र की आवाज दबाने निकल पड़े और कौन उन्हे अपनी उंगलियों पर नचा ले गया? जिसके कारण वह न्याय के विपरीत जाकर दुर्भावना से काम कर गए। वैसे इस मामले में शिकायतकर्ता एक संविदा स्वास्थ्य अधिकारी था जिसकी डिग्री भी फर्जी है ऐसा आरोप है वहीं उसके ऊपर कोरोना महामारी के दौरान मरीजों को मिलने वाली निशुल्क स्वास्थ्य सुविधाओं के भी बंदरबांट का आरोप है वहीं आज भी वह लोगों के स्वास्थ्य सुविधाओं में से की कटौती कर अपनी सुविधा जुटाता है और वही है जो कलेक्टर सरगुजा को भी अपनी गिरफ्त में कर ले गया उन्हे गलत करने मजबूर कर ले गया वहीं सरकार और स्वास्थ्य मंत्रालय उसकी गिरफ्त में पहले से ही था क्योंकि चाचा मंत्री हैं और तभी उसकी नौकरी बची है। और इसके पीछे का कारण है उसके खिलाफ समाचार का प्रकाशन जिससे आहत था वह और उसने ही रणनीति बनाई, जिस रणनीति पर चलने सरकार के साथ साथ आई पी एस मयंक श्रीवास्तव भी मजबूर हुए कलेक्टर सरगुजा भी मजबूर हुए वहीं जिला प्रशासन सरगुजा तो शरणागत रहा जब तक संविदा स्वास्थ्य अधिकारी के अनुसार कार्यवाही प्रेस कार्यालय पर नहीं हो गई।

-भूपेन्द्र सिंह-

अम्बिकापुर/रायपुर 26 अगस्त 2024 (घटती-घटना)।

भाजपा शासनकाल में छत्तीसगढ़ के इतिहास में 28 जुलाई 2024 का दिन दर्ज हो गया है, यह दिन इसलिए विशेष हो गया है क्योंकि इस दिन आदिवासी अंचल सरगुजा के अंबिकापुर से प्रकाशित होने वाले दैनिक घटती-घटना अखबार के कार्यालय व संपादक के प्रतिष्ठान पर बुलडोजर की कार्यवाही हुई थी और यह कार्यवाही सिर्फ अखबार के कलम बंद अभियान को रोकने के लिए की गई थी। इस कार्यवाही के सूत्रधार शासन के मंत्री थे और सरगुजा जिले के सबसे बड़े प्रशासनिक अधिकारी जो कलेक्टर थे,सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान...इनकी कहानी भी अजीब है इनसे रुष्ट विधायक व पार्टी के लोग इन्हें सरगुजा कलेक्टर से हटाना चाहते थे और यह बात उन्हें भी पता थी पर इसी बीच दैनिक घटती-घटना समाचार-पत्र स्वास्थ्य मंत्री की कमियों सहित उनके भतीजे प्रभारी डीपीएम व ओएसडी के फर्जी प्रमाण-पत्र को लेकर खबर प्रकाशित कर रहा था, जिस पर रोक लगाने के लिए पहले अखबार का शासकीय विज्ञापन बंद किया गया और जब शासकीय विज्ञापन बंद हुआ तो अखबार ने अपना कलम ही बंद कर दिया,वह कलम इसलिए बंद किया ...जिससे वर्तमान सरकार के संचालक यह ही बताएं कि...कमियो को ना छपे तो क्या छापे...? यह बात शायद पूरी सरकार को ही नागवार गुजरी और उसके बाद जो षड्यंत्र रचा गया वह किसी से छुपा नहीं है। सूत्रों की माने तो कलेक्टर को सरगुजा में बने रहने के लिए यह कहा गया कि कुछ भी करो लेकिन दैनिक घटती-घटना के कार्यालय व प्रतिष्ठान पर कार्यवाही करो, फिर क्या था कलेक्टर साहब अपनी कुर्सी बचाने के लिए नियमों को दरकिनार कर गए और मंत्रियों की बात सुनकर नियमों को तोड़ -मरोड़ कर जो कार्यवाही की वह किसी से छुपी नहीं है,यहां तक कि भू-राजस्व संहिता की धारा 248 के तहत,अगर किसी व्यक्ति या संस्था पर सरकारी ज़मीन पर कब्ज़े या अतिक्रमण का शक हो,तो उसे नोटिस भेजा जाता है, नोटिस जारी होने के बाद,मामले को तहसीलदार की अदालत में दर्ज कर लिया जाता है, कम से कम एक बार सुनवाई के बाद अगर प्रशासन यह साबित कर पाता है कि संबंधित व्यक्ति ने सरकारी ज़मीन घेरी है, तो उस पर जुर्माना लगाया जाता है, संशोधित नियमों के मुताबिक,यह जुर्माना घेरी गई ज़मीन के बाज़ार मूल्य का 20 प्रतिशत तक हो सकता है,अगर जुर्माना नहीं जमा किया जाता,तो उस व्यक्ति को जेल भी भेजा जा सकता है... वहीं दंड संहिता की धारा 166 के अनुसार, सरकारी कर्मचारी जो दूसरे को चोट पहुंचाने के इरादे से कानून का उल्लंघन करता है,उसे कारावास या जुर्माना या दोनों की अवधि के साथ दंडित किया जा सकता है। यदि कोई सरकारी कर्मचारी आपको नुकसान पहुंचता है या अपमान करता है, तो आईपीसी का यह प्रावधान लागू हो सकता है पर सरगुजा कलेक्टर कितने बेबस थे...मंत्रियों के सामने...की...उन्होंने कानूनी प्रावधानों को भी ध्यान नहीं दिया और वही किया जो ऊपर से मंत्री ने उन्हें आदेश दिया।

जमीन कीमती तब हो गई जब दैनिक घटती-घटना ने अपना कलम बंद कर दिया...

कई कलेक्टर आए गए भाजपा से लेकर कांग्रेस तक की सरकार आई उनके शासन में भी कलेक्टर आए व गए किसी को भी वह जमीन कीमती नहीं लगी, जमीन कीमती तब हो गई जब दैनिक घटती-घटना ने अपना कलम बंद कर दिया। ऐसे में सवाल तो यही उठता है कार्यवाही तो सिर्फ एक बहाना था यहां तो दैनिक घटती-घटना अखबार के कलम बंद अभियान को बंद करना था। एक अखबार को शासन प्रशासन से टक्कर लेना कितना महंगा पड़ेगा यह बताना था, यह भी संदेश देना था कि शासन प्रशासन व सरकार से टक्कर मत लेना नहीं तो सबके साथ यही होगा, इस कार्यवाही के बाद शायद सरगुजा में कुछ और महीने विलास भोसकर संदीपान कलेक्टर बने रहेंगे क्योंकि उन्होंने जो कार्यवाही की है वह शासन के लिए किसी उपहार से कम नहीं है वहीं इसके लिए उनका पुरस्कृत होना तय है वैसे अब यह भी सवाल उठता है की न जाने ऐसे कलेक्टरों को पढ़ा-लिखा कर क्यों भेजा जाता है की कानून व्यवस्था को बनाने के बजाय उसे बिगाड़ दे।

मंत्री जी कौन सी जन्मघुट्टी पिला दिये थे की सब आदेश एक दिन में तैयार हो गया, इसके पीछे राज क्या है

सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान आखिर आप क्यों कानून के नियमो को तोड़-मरोड़ कर रखने को मजबूर हो गये...मंत्री जी कौन सा जादुई कलम दिये थे...कि सब आदेश एक दिन तैयार हो गया था...?

तत्काल तो हिम्मत दिखा दिये...बस ये हिम्मत बरकरार रखियेगा...

अब कलेक्टर सरगुजा के लिए भी एक खुला-पत्र समाचार-पत्र की तरफ से प्रेषित है कि उन्होंने एक मंत्री के विवादित फर्जी डिग्री वाले भतीजे के लिए कानून को ही ताक पर रख दिया क्योंकि मंत्री का विवादित फर्जी डिग्री वाला भतीजा ऐसा चाहता था और ऐसा नहीं होने पर उसकी नौकरी चली जाती। कलेक्टर सरगुजा ने तत्काल तो हिम्मत दिखा दी...समाचार-पत्र कार्यालय/प्रतिष्ठान उन्होंने जमींदोज कर दिया लेकिन अब वह अंत तक हिम्मत सम्हाल कर रखें क्योंकि अब न्याय की लड़ाई अंजाम तक जायेगी और हर बात का जवाब कानूनी प्रक्रिया अनुसार लिया जायेगा की कानून का पालन क्यों नहीं किया गया वहीं दो विवादित फर्जी लोगों के लिए पूरे प्रदेश की सरकार साथ ही सरगुजा जिला प्रशासन इतना आत्मीयता से भर गया की उनके लिए कानून ही ताक पर रख दिया। वैसे सवाल यह भी है की क्या हर फर्जी डिग्री वाले साथ ही फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र वाले अधिकारी कर्मचारी के साथ यही नियम लागू होगा इस सरकार के कार्यकाल में...क्या असल की जगह फर्जी वाला ही नौकरी में होगा असल आंदोलन ही करता रहेगा।

कलेक्टर साहब...अब आप ही पूछ कर बता दीजिए...कि क्या छापे?

कलेक्टर सरगुजा से एक आग्रह भी है समाचार-पत्र का की अब वह ही पूछकर बता दें की क्या छापें। समाचार-पत्र ने कलम बंद किया तो पूरी सरकार दहल गई समाचार पत्र को बंद करने उसके विरोध को दबाने बुलडोजर तक चला दिया गया लेकिन फिर भी सरकार ने यह नहीं बताया की क्या छापें...समाचार-पत्र में...चूंकि दैनिक घटती-घटना समाचार पत्र के विरोध को कुचलने का जिम्मा कलेक्टर सरगुजा का था ऐसे में उनके माध्यम से ही अब सवाल है की वही सरकार से यह पूछकर समाचार-पत्र को अवगत करा दें की क्या छापें।

खुला पत्र प्रधानमंत्री को...

प्रधानमंत्री जी...हमारा अपराध बस इतना है की विवादित प्रमाण-पत्र से नियुक्त ओएसडी संजय मरकाम व नियम विरुद्ध तरीके से बने प्रभारी डीपीएम प्रिंस जायसवाल के मामले की जांच का समाचार हम अखबार में प्रकाशित कर रहे थे...और यह मांग हम नहीं पूर्व सरकार से लेकर वर्तमान सरकार तक के

कार्यकाल में दिव्यांग संघ इस मामले की जांच चाह रहा है ताकि सही दिव्यांगों का इसका लाभ मिल सके।

सवाल तो बनता है मंत्री जी... कि आखिर जांच कराने से इतना तकलीफ क्यों हो रही है...दूध का दूध पानी का पानी हो जाने दीजिये...?

मंत्री जी को आखिर सूरजपुर के प्रभारी डीपीएम साथ ही अपने ओएसडी के प्रमाण पत्रों की जांच साथ ही प्रभारी डीपीएम के उन कारनामों की जांच जिनमे भ्रष्टाचार के आरोप हैं से क्यों आपत्ति है? क्या सही क्या गलत यह जांच के बाद तय होने दीजिए। प्रभारी डीपीएम की डिग्री फर्जी है इसकी शिकायत की जांच क्यों नहीं हो रही है? ओएसडी फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र के आधार पर नौकरी कर रहा है? क्यों जांच नहीं हो रही है। क्या यह अधिकार खास लोगों को ही है? यदि फर्जी डिग्री और फर्जी दिव्यांग प्रमाण पत्र से नौकरी जायज है तो यह अधिकार सभी को प्रदेश में प्रदान करें स्वास्थ्य मंत्री जी...क्यों कोई लाखों करोड़ों खर्च करे मेहनत करे जब मुफ्त ही उसे पद मिलता है?

यही सच है...सच लिखना गुनाह क्यों माना जा रहा है?

सुशासन के रक्षक विष्णु देव साय जी के सलाहकारों को स्वास्थ्य मंत्री ने व्यक्तिगत (इन दोनों पर जांच ना हो) कारणों से गलत जानकारी देकर सरगुजा में लोकतंत्र को कुचलने में सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर को विश्वास में लेकर राज्य शासन के सुशासन के वादे को सवालो के कटघरे में खड़ा कर दिया... सुनवाई के कानूनी अधिकार से भी वंचित करने के लिये कोई ऐसा षड्यंत्र नही था जो नही किया गया हो...जिला प्रशासन सरगुजा के द्वारा...।

क्यों..जून 2024 से विज्ञापन बंद...पूछने पर मंत्री जी का मौखिक शिकायत था मयंक श्रीवास्तव साहब का उत्तर था?

विरोध स्वरूप कलम बंद कर दिये और पूछे की आप ही बताओ कि क्या छापे...फिर क्या था...कर दिये अत्याचार और अविनाश सिंह घटती-घटना के संपादक के संपत्ति को कुचल कर कानून का हवाला देने में कलेक्टर साहब पूरा कागजी व्यवस्था कर लिये...पर सुनवाई के अधिकार से वंचित करने के लिये 5-6 जेसीबी...1 हाइड्रा...200-300 लोग भेज कर करवा दिये बुलडोजर कार्यवाही...जवाब और सवाल बहुत है...?

इन दोनों के प्रमाण-पत्र के जांच में आपत्ति क्यों...सरकार को?

प्रभारी डीपीएम व स्वास्थ्य मंत्री के ओएसडी के प्रमाण पत्र के जांच से आपत्ति क्यों है यदि आपत्ति नहीं है तो तत्काल उन्हें हटाकर जांच क्यों नहीं किया जा रहा? जांच कार्यवाही न होने को लेकर कई सवाल खड़े हैं कमियों को छापने वाले पत्रकार भी सरकार से टकरा रहे हैं और सरकार भी पत्रकारों पर अत्याचार करने को तैयार है पर जांच कार्यवाही में तत्परता क्यों नहीं दिखाई जा रही यह भी एक सवाल है?

खुला पत्र

देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?

अम्बिकापुर,26 अगस्त 2024 (घटती-घटना)। माननीय मुख्यमंत्री से भी सवाल है...छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार है...केंद्र में भी आपकी पार्टी की सरकार है...पर छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमियां दिखाने से रोकने का भी प्रयास हो रहा है...यह प्रयास कहीं ना कहीं स्वस्थ लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास है...जहां पर भाजपा सरकार से लोगों को बेहतर करने की उम्मीद होती है तो वहीं पर छत्तीसगढ़ में नवनिर्वाचित मंत्री,विधायक बे-लगाम हो चुके हैं...उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है उसे जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ दिख रहे हैं...उनकी कमियों को बताना उन्हें रास नहीं आ रहा इसलिए वह पत्रकार,संपादक का कलम बंद करने का प्रयास कर रहे हैं अब इस पर आप ही संज्ञान ले...और बताएं की संपादक व पत्रकार कौन सी खबर प्रकाशित करें?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

कलम बंद...का 56 वां दिन

?

कलम बंद...का 56 वां दिन

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

भारत में सच्चे पत्रकार को राजनीतिक पार्टियों से खतरा क्यों रहता है ?

अम्बिकापुर,26 अगस्त 2024(घटती-घटना)। भारत अपने पत्रकारों को निडर होकर काम करने का स्वतंत्र तरीका प्रदान करने में बहुत पीछे है...इन दिनों...कुछ को छोड़कर...हर दूसरा पत्रकार वही खबर दे रहा है जो सरकार की प्रशंसा करती है...नए चैनल लोगों को सरकार द्वारा की गई गलती से विचलित करने के लिए विभिन्न विषयों पर अनावश्यक बहस दिखाएंगे...इसके कारण,अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो किसी का ध्यान नहीं जाता हैं...दूसरा कारण यह है कि पत्रकार अपने सिद्धांतों और मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि आज स्थिति ऐसी है कि स्थापना के खिलाफ विषयों पर बोलने या लिखने वाले पत्रकारों को धमकी देना,गाली देना और मारना कई अन्य देशों की तरह भारत में भी एक वास्तविकता बन गई है...देश और दुनिया को डरा दिया है...वहीं,पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमलों की घटनाओं ने एक बार फिर उन्हें सुर्खियों में ला दिया है...जो पत्रकार देश और उसके आम नागरिकों के लिए लिखे वे मरे या प्रताड़ित हुए सरकारी तंत्रों के द्वारा...!

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?

» भ्रष्टाचार की खबरों से दिक्कत...

» कमी दिखाओ तो दिक्कत...

» जनता की परेशानियों को दिखाओ तो दिक्कत...

अम्बिकापुर ,26 अगस्त 2024(घटती-घटना)। आखिर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ करें तो क्या करें? सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने पत्रकार दौड़ रहा पर पत्रकार की दौड़ के पीछे निर्वाचित जनप्रतिनिधि उसकी दौड़ की गति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं,भ्रष्टाचार बढ़ता रहे पर पत्रकार ना दिखाएं क्या यही चाहता है जनप्रतिनिधि या फिर सरकारी तंत्र।

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

कलम बंद...का 56 वां दिन

?

कलम बंद...का 56 वां दिन

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

शाकिब अल हसन फिर सभी फॉर्मेट से होंगे बैन?

» बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड पर बढ़ने लगा दबाव

ढाका,26अगस्त 2024।

बांग्लादेश के सीनियर ऑलराउंडर शाकिब अल हसन की मुश्किलें कम नहीं हो रही हैं। शाकिब अल हसन इन दिनों पाकिस्तान के रावलपिंडी में हैं, जहां दोनों टीमों के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। बांग्लादेश ने पहला टेस्ट मैच 10 विकेट से अपने नाम किया और इस दौरान शाकिब अल हसन का रोल भी इस जीत में अहम रहा। हालांकि, शाकिब दूसरा टेस्ट खेलेंगे या नहीं इसको लेकर सस्पेंस बना हुआ है। बांग्लादेश में हुए हिंसक प्रोटेस्ट के दौरान शाकिब पर एक मर्डर का आरोप लगा है, जिसको लेकर शिकायत भी दर्ज कराई गई है। क्रिकबज की एक खबर के मुताबिक बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड को एक लीगल नोटिस भेजा गया है, जहां वकीलों ने बीसीबी से कहा है कि शाकिब अल हसन को क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से बैन कर दिया जाए। शाकिब पर पहले भी बैन लग चुका है। शाकिब बांग्लादेश की 12वीं संसद में आवामी लीग के पूर्व सांसद भी हैं। 37 साल के शाकिब अल हसन उन 147 लोगों में शामिल हैं जिनके खिलाफ अगस्त के शुरू में विरोध प्रदर्शनों के दौरान कथित हत्या के लिए आरोप दायर किए गए हैं।

कौन बनेगा पंजाब किंग्स का कप्तान

» टीम को करना होगा बड़ा फैसला

नई दिल्ली,26 अगस्त 2024।

आईपीएल का अगला सीजन अभी दूर है, लेकिन इंडियन प्रीमियर लीग को लेकर रोज ही कोई ना कोई खबर सामने आ जाती है। इस बीच टीमों की तैयारी शुरू हो चुकी है। इसी साल के आखिर में ऑक्शन भी होना है। माना जा रहा है कि जल्द ही बीसीसीआई की ओर से इसके नियम बता दिए जाएंगे, ताकि टीमें अपनी उसी हिसाब से तैयारी करें। इस बीच पंजाब किंग्स को लेकर टेंशन थोड़ी सी बढ़ी हुई है। दरअसल टीम के कप्तान रहे शिखर धवन ने अब रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया है, यानी टीम को अब नए कप्तान की तलाश करनी होगी।

शिखर धवन का आईपीएल खेलना मुश्किल

शिखर धवन पिछले दो सीजन से पंजाब किंग्स की कप्तानी संभाल रहे थे। हालांकि आईपीएल 2024 में वे चोटिल हो गए, इसके बाद ना तो वे खेल पाए और ना ही कप्तानी कर पाए। ऐसे में सैम करन को कप्तानी की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। लेकिन टीम का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा और टीम आखिरी चार में भी पहुंचने में कामयाब नहीं हो पाई थी। अब अगर शिखर धवन आईपीएल भी नहीं खेलेंगे तो फिर टीम की कमान किसके पास होगी, ये बड़ा सवाल है। वैसे तो उनके पास सैम करन के रूप में एक ऐसा खिलाड़ी है, जो इस वक्त कप्तानी की जिम्मेदारी संभल सकता है, लेकिन एक तो उनका खुद का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है, साथ ही वे काफी महंगे भी हैं। हो सकता है कि पंजाब किंग्स इस साल के आखिर में होने वाले ऑक्शन से पहले उन्हें रिलीज ही कर दे।

ऑक्शन में किसी नामी खिलाड़ी को खरीदना चाहेगी पंजाब की टीम

पंजाब किंग्स की पहली कोशिश यही होगी कि ऑक्शन में किसी ऐसे खिलाड़ी की खोज की जाए, जो कप्तानी की भी जिम्मेदारी संभाल सके। इसके लिए ये जरूरी होगा कि ऑक्शन से पहले टीमों को कुछ ही खिलाड़ी रिटेन करने की परमीशन दी जाए, ताकि बड़ी संख्या में बड़े खिलाड़ी नीलामी के लिए मैदान में आएं और टीम उन्हें अपने पाले में कर पाए। लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ तो हो सकता है कि सैम करन ही अगले साल भी इंडियन प्रीमियर लीग में टीम की कमान संभालते हुए नजर आएं। वैसे भी पंजाब की टीम आईपीएल में सबसे ज्यादा कप्तान बदलने के लिए जानी और पहचानी जाती है, इसके बाद भी टीम के पास कोई आईपीएल खिताब अब तक नहीं है।

टीम का नाम बदला, लेकिन किस्मत नहीं

पंजाब किंग्स की टीम पहले ही सीजन से आईपीएल खेल रही है। टीम का नाम पहले किंग्स इलेवन पंजाब था, जो बाद में बदल दिया गया। नाम बदलने के बाद भी टीम की किस्मत नहीं बदली और टीम पहले आईपीएल खिताब के लिए अभी तक तरस रही है। हालांकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा तो यहां तक किया जा रहा है कि रोहित शर्मा को पंजाब की टीम कप्तान बनाना चाहती है। लेकिन ये अभी पता नहीं चल पाया है कि इस तरह की खबरों में कितनी सच्चाई है। आने वाले वक्त में जब आईपीएल के नियम तय हो जाएंगे तो इस पर कुछ पक्के तौर पर कहा जा सकता है। फिलहाल तो इंतजार करना ही ज्यादा बेहतर होगा।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से इन 3 खिलाड़ियों की होगी छुट्टी!

» कप्तान फाफ डु प्लेसिस का नाम भी शामिल

नई दिल्ली,26 अगस्त 2024।

आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन इसी साल दिसंबर में होने वाला है। लेकिन इससे पहले 17 सालों से खिताब का सूखा झेल रही रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की टीम बड़े नामों की छुट्टी कर सकती है। दरअसल, कहा जा रहा है कि टीम अपने तीन दिग्गज खिलाड़ी फाफ डु प्लेसिस, कैमरन ग्रीन और ग्लेन मैक्सवेल को रिलीज कर सकती है। बता दें कि,इन तीनों खिलाड़ियों ने पिछले सीजन में कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया था।

ग्लेन मैक्सवेल

मैक्सवेल ने सबसे ज्यादा निराशा किया, 12.25 करोड़ रुपये वाले इस खिलाड़ी ने पिछले सीजन में महज 52 रन ही बनाए थे। आरसीबी ने मैक्सवेल को आईपीएल 2022 के मेगा ऑक्शन से पहले 11 करोड़ रुपये में रिटेन किया था। जहां इस ऑलराउंडर ने सीजन 2022 और 2023 में काफी अच्छा प्रदर्शन किया था वहीं 2024 में ये खिलाड़ी फ्लॉप रहा था। उन्होंने 9 पारियों में केवल 52 रन बनाए और सिर्फ 6 विकेट झटके। वह प्लेइंग इलेवन में अपनी जगह बरकरार रखने में नाकामयाब रहे।

फॉफ डुप्लेसिस

आरसबी इस कड़ी में मेगा ऑक्शन से पहले अपने कप्तान को ही रिलीज कर सकती है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने फाफ डुप्लेसिस को आईपीएल मेगा ऑक्शन में 7 करोड़ रुपये ममें अपने साथ जोड़ा था। उन्होंने टीम की कप्तानी की। 2022, 2023 और 2024 में उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया। 2023 में उन्होंने 730 रन बनाए थे। 2022 में 468 और 2024 में 438 रन बनाए। उन्होंने 3 साल में 45 मैच में 1636 रन बनाए। दो बार टीम प्लेऑफ में भी पहुंची, लेकिन उम्र उनके खिलाफ जाती है। वह 40 साल के हो गए हैं।

कैमरन ग्रीन

कैमरन ग्रीन को आरसीबी ने मुंबई इंडियंस से 17.5 करोड़ रुपये में आईपीएल 2024 से पहले ट्रेड किया था। ग्रीन ने उस तरह प्रदर्शन नहीं किया, जैसा उनसे उम्मीद की गई। उन्होंने 31 की औसत से 255 रन बनाए। वह एक भी अर्धशतक नहीं लगा पाए। गेंदबाजी में उन्होंने 10 विकेट लिए।

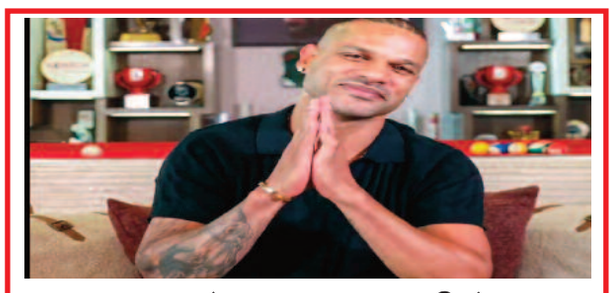

संन्यास के बाद अब लीजेंड्स लीग क्रिकेट से जुड़े शिखर धवन

नई दिल्ली,26 अगस्त 2024।

टीम इंडिया के गब्बर यानी शिखर धवन ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। जिसके बाद वो सोमवार 26 अगस्त को लीजेंड्स लीग क्रिकेट से जुड़ गए हैं। 38 वर्षीय बाएं हाथ के बल्लेबाज अब आईपीएल के बाहर टी20 लीग में हिस्सा ले सकते हैं। धवन ने भारत के लिए 34 टेस्ट, 167 वनडे और 68 टी20 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने कुल 12,286 अंतर्राष्ट्रीय रन बनाए हैं। लीजेंड्स लीग क्रिकेट का आयोजन सितंबर में किया जाएगा।

शिखर धवन ने लीजेंड्स लीग क्रिकेट से जुड़ने पर कहा, मेरा शरीर अभी भी खेल की मांगों के लिए तैयार है। मैं अपने निर्णय से सहज हूं और क्रिकेट मेरे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। ये मुझसे कभी भी नहीं छूटेगा। मैं अपने क्रिकेट मित्रों के साथ फिर से जुड़ने और अपने फैंस का मनोरंजन जारी रखने के लिए उत्सुक हूं। हम साथ मिलकर नई यादें बनाएंगे। वहीं लीजेंड्स लीग के सह संस्थापक रमन रहेजा ने लीग में शिखर धवन का स्वागत किया है। इस दौरान उन्होंने कहा है कि, शिखर धवन के हमारे साथ जुड़ने से हम रोमांचित हैं। उनका अनुभव और स्वभाव निस्संदेह टूर्नामेंट को आगे बढ़ाएगा और फैंस का मनोरंजन करेगा। हम उन्हें क्रिकेट के अन्य दिग्गजों के साथ एक्शन में देखने के लिए उत्सुक हैं। ये दिग्गज क्रिकेटरों के लिए दूसरी पारी के रूप में हमारे पोजिशन को और मजबूत करेगा। लीजेंड्स क्रिकेट लीग का नया सीजन सितंबर 2024 में शुरू होने जा रहा है।

बुची बाबू क्रिकेट टूर्नामेंट में सूर्यकुमार, श्रेयस और सरफराज पर रहेगी निगाहें

नई दिल्ली,26 अगस्त 2024।

भारतीय बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव अपना टेस्ट करियर पटरी पर लाने के लिए बुची बाबू क्रिकेट टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करना चाहेंगे जिसमें उनकी टीम मुंबई मंगलवार से यहां शुरू होने वाले मैच में टीएनसीए एकादश का सामना करेगी। श्रेयस अय्यर भी मुंबई की टीम का हिस्सा हैं और वह भी सत्र की शुरुआत में होने वाले इस टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करके चयनकर्ताओं का ध्यान खींचने की कोशिश करेंगे।

अय्यर ने अपना आखिरी टेस्ट मैच फरवरी में खेला था। कई स्टार खिलाड़ियों से सजी मुंबई की टीम का नेतृत्व सरफराज खान करेंगे जिनके लिए सभी शीर्ष खिलाड़ियों की वापसी के बाद टेस्ट टीम में जगह बनाना आसान नहीं होगा। सरफराज ने इस साल के शुरू में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करके अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया था।

विराट कोहली, केएल राहुल और ऋषभ पंत अलग-अलग कारण से इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला में नहीं खेल पाए थे लेकिन उनके बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाली दो टेस्ट मैच की श्रृंखला के लिए उपलब्ध रहने की संभावना है। बुची बाबू क्रिकेट टूर्नामेंट के तीसरे दौर के मैच में सभी का ध्यान निश्चित तौर पर सूर्यकुमार पर रहेगा जिन्होंने अपना एकमात्र टेस्ट मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फरवरी 2023 में खेला था।

सूर्यकुमार ने इसके बाद सीमित ओवरों की क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन किया। बुची बाबू टूर्नामेंट सूर्यकुमार और अन्य स्टार खिलाड़ियों के लिए दलीप ट्रॉफी के लिए अभ्यास का काम करेगा। दलीप ट्राफी पांच सितंबर से शुरू होगीं। सूर्यकुमार ने अपना अंतिम प्रथम श्रेणी मैच पिछले साल दलीप ट्राफी में ही खोला था। तब वह चार पारियों में केवल 71 रन बना पाए थे। सरफराज ने इस साल के शुरू में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया। उन्होंने पांच पारियों में 50 की औसत से 200 रन बनाए जिसमें तीन अर्धशतक शामिल हैं।

वेस्टइंडीज के अकील होसेन ने रचा इतिहास

» टी 20 के लीजेंड खिलाड़ियों की लिस्ट में हुए शामिल

त्रिनिदाद,26 अगस्त 2024।

वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज खेली जा रही है। इस सीरीज के पहले दो मुकाबलों को वेस्टइंडीज की टीम ने अपने नाम कर लिया है। इसी बीच वेस्टइंडीज के एक खिलाड़ी ने इतिहास रच दिया है। यह खिलाड़ी कोई और नहीं बल्कि वेस्टइंडीज के स्टार ऑफ स्पिनर अकील होसेन हैं। अकील होसेन वेस्टइंडीज के लिए 50 टी20 इंटरनेशनल विकेट लेने वाले सातवें खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने त्रिनिदाद के तारौबा में ब्रायन लारा स्टेडियम में वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका के बीच दूसरे टी20 इंटरनेशनल के दौरान यह उपलब्धि हासिल की।

सरफराज अहमद,शोएब मलिक सहित पांच प्लेयर्स को मिली बड़ी जिम्मेदारी

रावलपिंडी,26 अगस्त 2024।

पाकिस्तान क्रिकेट में इस समय बदलाव का दौर चल रहा है। वकार यूनिस को हाल ही में पीसीबी का सलाहकार नियुक्त किया गया था। लेकिन इसके बाद उन्होंने इस्तीफा भी दे दिया था। अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बड़ा फैसला लिया है। पीसीबी ने सोमवार को दिग्गज खिलाड़ियों मिस्बाह-उल-हक, सकलैन मुश्ताक, सरफराज अहमद, शोएब मलिक और वकार यूनिस को चैंपियंस कप घरेलू टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाली पांच टीमों का मेंटर नियुक्त किया।

खेल करियर जारी रखने के साथ बने रहेंगे मेंटर

पीसीबी के एक बयान के अनुसार इन सभी खिलाड़ियों(मिस्बाह-उल-हक, सकलैन मुश्ताक, सरफराज अहमद, शोएब मलिक और वकार यूनिस) को तीन साल के अनुबंध पर मेंटर नियुक्त किया गया है। सकलैन मुश्ताक नेशनल टीम के पूर्व मुख्य कोच हैं। मिस्बाह अल हक और वकार यूनिस नेशनल टीम के साथ भी कोचिंग कर चुके हैं। पीसीबी ने कहा कि मेंटर नियुक्त किए गए सभी पूर्व खिलाड़ियों का पहला टूर्नामेंट चैंपियंस वनडे कप होगा जो 12 से 29 सितंबर के बीच फैसलाबाद में खेला जाएगा।

पीसीबी ने अपने सभी टॉप खिलाड़ियों के लिए इस 50 ओवर के टूर्नामेंट में भाग लेना अनिवार्य कर दिया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इसकी कोई वजह नहीं बताई है कि वकार यूनिस जो पीसीबी के सलाहकार थे। अब उस भूमिका में क्यों नहीं हैं और वह अब इसके बजाय मेंटर क्यों हैं। पीसीबी ने स्पष्ट किया है कि सरफराज अपना खेल करियर जारी रखने के साथ मेंटर की भूमिका भी निभाएंगे।

पाकिस्तान क्रिकेट को होगा फायदाः मोहसिन नकवी

पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी के हवाले से बताया गया है कि चैंपियंस कप टीमों के लिए मेंटर के रूप में पांच असाधारण चैंपियनों का स्वागत करते हुए मुझे खुशी हो रही है। ये व्यक्ति अपने साथ ढेर सारा क्रिकेट अनुभव, ज्ञान और विशेषज्ञता लेकर आते हैं। उस खेल के साथ, जिसे हम सभी प्यार करते हैं। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को सभी फॉर्मेट में क्रिकेटरों की अगली पीढ़ी की पहचान करने, विकसित करने में मदद करेगा। इससे पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम को फायदा तो होगा ही बल्कि घरेलू और इंटरनेशनल क्रिकेट के बीच अंतर को पाटने में भी मदद मिलेगी।

एक हाथ में बंदूक तो दूसरे में खून,सिद्धांत चतुर्वेदी का सामने आया बेहद खतरनाक एक्शन लुक

एक्सेल एंटरटेनमेंट की आगामी एक्शन थ्रिलर युद्धा अभी से ही सुर्खियों में है, और नए पोस्टर रिलीज के साथ, उसको लेकर अब एक्साइटमेंट और बढ़ गई है, जिनमें सिद्धांत चतुर्वेदी और मालविका मोहनन नजर आ रहे हैं। नए पोस्टर्स ने फैंस को उत्साहित कर दिया है और वे यह देखने के लिए एक्साइटेड हैं कि फिल्म कैसी होगी। इसके साथ ही मूवी की रिलीज डेट भी सामने आ गई है।सोलो पोस्टर में सिद्धांत को एक नई एक्शन फिल्म में खून से लथपथ और एनर्जी-डिटरमिनेशन से भरपूर दिखाया गया है। उनके इंटेंस लुक से पता चलता है कि युद्धा में बहुत सारा जबरदस्त एक्शन होने वाला है। दूसरे पोस्टर में सिद्धांत और मालविका मोहनन को एक साथ दिखाया गया है, दोनों ही इंटेंस और एक्शन के लिए तैयार दिख रहे हैं। उनकी दमदार केमिस्ट्री फैंस को और ज्यादा देखने के लिए उत्सुक कर रही है।मॉम जैसी फिल्म बनाने वाले रवि उदयवार की डायरेक्टेड युद्धा सिद्धांत के लिए एक बड़ा मौका है, क्योंकि इसमें वह एक खास रोल कर रहे हैं। एक्टर ने अपनी एक्शन से भरपूर भूमिका के लिए स्क्रू किकबॉक्सिंग और जिउ-जित्सु की कड़ी ट्रेनिंग ली है। उनकी मेहनत पोस्टर्स में साफ दिखाई दे रही है, जो एक मजबूत एक्शन हीरो के रूप में उनके ट्रांफोर्मेशन पर रोशनी डालता है। बता दें कि यह फिल्म मालविका की हिंदी सिनेमा में डेब्यू फिल्म भी है।

एक्सेल एंटरटेनमेंट के रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर द्वारा प्रोड्यूसर, युद्धा में मालविका मोहनन भी हैं, जिनकी भूमिका पहले से ही चर्चा का विषय बनी हुई है। रवि उदयवार द्वारा डायरेक्टेड यह फिल्म 20 सितंबर, 2024 को रिलीज होगी और उम्मीद है कि यह साल की मच अवेटेड एक्शन थ्रिलर में से एक होने वाली है।

मैं 10+2 में थी,मुझे बुलाया और दरवाजा बंद था,मैं हेल्पलेस थी,रेवती के इन आरोपों पर सिद्दीकी ने लिया एक्शन

हाल ही में एक इंटरव्यू में साउथ एक्ट्रेस रेवती संपत ने मलयालम स्टार सिद्दीकी पर कुछ सनसनीखेज आरोप लगाए हैं, जिसके बाद से इंडस्ट्री में उथल-पुथल मच गई है। एक्ट्रेस ने बताया कि ये पूरी कहानी तब से शुरू हुई थी जब वो स्कूल में ही थीं और बाद में उन्होंने उनके साथ फिजिकल अब्यूज़ करना शुरू कर दिया था। जहां एक्ट्रेस ने सिद्दीकी पर स्कूल के दिनों से उन्हें परेशान करने की बातें कही हैं, वहीं एसोसिएशन ऑफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट के महासचिव सिद्दीकी ने भी उनके खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई है। यहां ये भी बता दें कि केरल सरकार ने मलयालम फिल्म इंडस्ट्री की सच्चाई और वर्किंग कंडीशन का खुलासा करने वाली जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट की जांच के लिए अब स्ट्रक्चर बनाई है।

रेवती ने हाल ही में सिद्दीकी पर हैरान करने वाले आरोप लगाए हुए बताया कि ये सब से शुरू हुई जब वह अपने लेट टीनेज में थीं। उन्होंने बताया कि सिद्दीकी ने एक सोशल मीडिया अकाउंट से उनसे मेसेज भेजना शुरू किया जो फेक लग रहा था। उन्होंने कहा, जब सिद्धिकी ने मुझसे सम्पर्क किया तब मैं 10+2 में थी। वह मुझे जिस अकाउंट से मेसेज करते थे वो फेक लगता था। वो मुझसे 2 साल तक सम्पर्क में रहे और वो मुझे बेटी कहकर बुलाते थे। एक्ट्रेस ने आगे कहा, उन्हें पता लग गया था कि मैं एक्टिंग में इंटरेस्टेड हूं, वो एक क्रिमिनल है और सबकुछ उन्होंने प्लान तरीके से किया होगा। रेवती ने कहा कि सिद्दीकी के प्रफेशनल बिहेवियर ने देखते ही देखते काफी डिस्टर्बिंग टर्न ले लिया था।

एक्ट्रेस ने कहा, वो मुझे मोल कहकर बुलाते थे। ये शब्द केरल में एक युवा लड़की या बेटी के लिए इस्तेमाल होता है, लेकिन तब मुझे नहीं पता था कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है। उन्होंने मेरा शारीरिक और मानसिक शोषण किया है, उन्होंने मुझे प्रताड़ित किया है, वो एक अपराधी है। मै एक समय पर गंभीर मानसिक आघात से गुजर चुकी हूं।

उन्होंने आगे बताया कि फिल्म के मौके के बहाने एक मीटिंग में सिद्दीकी का बिहेवियर कथित तौर पर काफी घटिया हो गया था। उन्होंने कहा, शुरू में तो सब प्रोफेशनल लग रहा था लेकिन थोड़ी चर्चा के बाद ही सारी बातचीत अचानक शरीर के इर्द-गिर्द बातों में बदल गई। समय के साथ मुझे समझ आ गया कि ये एक जाल बिछाया था। दरवाजा बंद था, मैं हेल्पलेस थी और काफी डर गई थी।

एक्ट्रेस ने बातचीत में आगे कहा, मैंने मदद भी मांगी थी, लेकिन कोई सपोर्ट नहीं मिला। मेरी मदद के लिए वहां कोई नहीं था। ऐसा नहीं है कि मैंने इसके खिलाफ कानूनी रूप से कदम नहीं उठाया। एक बार मैंने कानूनी रूप से कदम उठाया था लेकिन मैं ये दोबारा नहीं कर सकती। अगर आप ये आश्वासन दें कि हमें सिक्योरिटी मिलेगी तो मैं सबूतों के साथ आगे आने के लिए तैयार हूं। मैं अभी भी अपने करियर को पटरी पर लाने की कोशिश कर रही हूं। मलयालय फिल्म जगत में महिलाओं के वर्किंग कंडीशन पर हेमा समिति की विस्फोटक रिपोर्ट आने के बाद हड़कंप मच गया है। इंडस्ट्री में महिलाओं के शोषण की जांच के लिए गठित जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट में मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं के साथ हुए उत्पीड़न और शोषण के मामलों का खुलासा किया गया है, जिससे पूरी इंडस्ट्री में हलचल है। अब खबर है कि केरल सरकार ने जस्टिम हेमा कमेटी की रिपोर्ट पर संज्ञान लेते हुए मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचारों और दुर्व्यवहार की जांच के लिए एक एसआईटी टीम का गठन किया है।

CMYK

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलम बंद अभियान का 56 वां दिन

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग के संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...के पन्द्रहवें दिन भी केंद्र सरकार से अनुमोदित विज्ञापन नियमावली के आदेश को ठेंगा दिखाने वाले जनसंपर्क विभाग के द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं देने के पीछे किसका हाथ...

छत्तीसगढ़ सरकार घर तोड़िए या कार्यालय तोड़िए...इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक...

अब तो बताईए मुख्यमंत्री जी...क्या छापें ?

क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी ?

क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी ?

क्यूं न लिखें सच ?

इमरजेंसी पर बात...हर बात पर आरोप...तो छत्तीसगढ़ में एक आईपीएस व आईएएस के तुगलकी फरमान पर आदिवासी अंचल से विगत 20 वर्षों से प्रकाशित अखबार पर क्यों किया गया जुर्म...?

क्यों कलमबंद आंदोलन के लिए विवश होना पड़ा एक दैनिक अखबार को...?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)